Q शहरीकरण से आपका क्या अभिप्राय है? शहरी के प्रभावों का वर्णन कीजिए।

अथवा

शहरीकरण का अर्थ बताते हुए, शहरीकरण की समस्याओं का वर्णन करें।

अथवा

शहरीकरण से आप क्या समझते हैं? बच्चों के शहरी गन्दी बस्तियों में रहने के क्या दुष्परिणाम हैं? इन बच्चों की शिक्षा के लिए भारत सरकार ने क्या कदम उठाए हैं?

उ० परिचय :-

शहरीकरण वह प्रक्रिया होती है जिसमें लोग गाँवों को छोड़कर शहरों की तरफ जाने लगते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था की एक उभरती हुई समस्या, प्रवास की समस्या है प्रवास से अभिप्राय है लोगों का देश के अन्दर एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक देश से दूसरे देश में बसना। अतएव प्रवास दो प्रकार का हो सकता है - आन्तरिक प्रवास तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास।

शहरीकरण का अर्थ :—

शहरीकरण या नगरीकरण से अभिप्राय है ऐसे स्थानों की संख्या में वृद्धि की प्रक्रिया जहां अधिक से अधिक लोग रहना चाहते हैं, जिससे इन स्थानों में जनसंख्या का आहार बढ़ता जाता है। नगरीकरण में वृद्धि के साथ लोगों ने कृषि प्रधान व्यवसायों के स्थान पर औद्योगिक व्यवसायों और नौकरी जैसे सेवा कार्यों को अपनाया है। गांव से लोगों का पलायन करना भी नगरीकरण का एक मुख्य कारण है। लोग आकर्षक और अधिक आर्थिक लाभों की खोज में गांव से शहर की ओर भाग रहे हैं।

प्राचीन भारत में पाणिनी ने दो भिन्न-भिन्न प्रकार के आवास स्थलों की चर्चा की थी। अतः ग्राम व नगर की परम्परा बहुत पुरानी है। आज का आधुनिक शहर बहुत आबादी वाला और विशाल हो चुका है। शहरों की कुछ मुख्य विशेषताएं हैं—

1 शहर गांवों से कई दृष्टि से भिन्न होते हैं।
2 शहर शक्ति के केन्द्र होते हैं। यहां से भी व्यापार, राजनीति प्रशासन, चिकित्सा, यातायात, वाणिज्य तथा शिक्षा से जुड़ी

सभी गतिविधियां संचालित होती हैं।

3 शहरी जीवन की गति तेज और जटिल होती है।

4 शहरों के आकार बड़े होते हैं। आजकल शहरों के निकट के गांव भी धीरे-धीरे शहरों में बदल रहे हैं तथा में विलीन हो रहे हैं।

5 गांव से पलायन करने वाले अधिकतर लोग शहरों में किरायेदार के रूप में रहते हैं।

6 भारत के शहरों में विवाह, परिवार, जाति, धर्म जैसी सामाजिक संस्थाओं का स्वरूप निर्मित है। इनमें निरंतरता और परिवर्तन के तत्व होते हैं।

शहरी जीवन की विशेषताएं :—

शहरी जीवन की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं—

1 शहरों में आमने-सामने की अन्तःक्रिया के स्थान पर अप्रत्यक्ष और उपकरणों की मध्यस्थता वाली अंतःक्रिया हो रही है।

2 अंतर्वैयक्तिक संबंधों का स्वरूप औपचारिक समझौतों पर आधारित योजनाबद्ध और आकलन पर आधारित होता जा रहा है। व्यापार में सहज स्वाभाविकता का स्थान तार्किकता और अभिजात्य ने ले लिया है। Sophistication and Rationality

III शहरी लोगों में मित्रता बंधु-बांधवों तक सीमित न होकर व्यक्ति के व्यावसायिक संबंधों पर आधारित होती है।

IV शहरी लोग समय का विशेष ध्यान रखते हैं वे समय के दबाव में ही रहते हैं उनके पास समय की कमी के कारण उन्हें तीव्रता से कार्य करना पड़ता है।

V शहरों में भोजन की आदतें और सामान्य घरेलू कार्यों तथा किचन आदि का संगठन भिन्न प्रकार का होता है।

VI नगरीकरण के मुख्य अंग हैं- उपभोक्तावाद और बाजार की ओर उन्मुखता।

नगरीकरण / शहरीकरण की समस्याएं:-

नगरीकरण के परिणाम-स्वरूप अनेक समस्याएं पैदा हुई हैं। कुछ मुख्य समस्याएं निम्नलिखित हैं—

1 गंदी बस्तियों की संख्या में वृद्धि:-

गंदी बस्ती या स्लम उस क्षेत्र को नाम दिया जाता है जहां अत्यधिक भीड़-भाड़, अस्वास्थ्यकर्यक परिस्थितियां या आवश्यक नागरिक सुविधाओं

का अभाव है। भारत में ऐसी बस्तियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है।

2. आवास समस्याएं :-
शहरों में आवास समस्या हमेशा बनी रहती है। यहां आवास की आवश्यकताओं को पूरा करने की चुनौती बनी रहती है।

3. भीड़ और नियंत्रितकरण :-
शहरों में भीड़ की समस्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है। भीड़ का परिणाम अधिक प्रतियोगिता भाव पैदा करता है।

4. शहर का रख-रखाव :-
जनसंख्या विस्फोट के परिणामस्वरूप शहरों की व्यवस्था लड़खड़ा गई है। यातायात से सड़कों पर तथा गलियों में रुकावटें पैदा हो रही है। भूमि का उपयोग असंतुलित हो चुका है।

5. कानून और व्यवस्था :-
शहरी इलाकों में अनेक प्रकार के अपराधों में निरंतर वृद्धि हो रही है। चरने, प्रदर्शन आदि ने कानून व्यवस्था को कमजोर कर दिया है।

6 यातायात और आवागमन :-
लोग हर रोज दूर-दूर से शहरों में आते हैं, वे अपनी रोजी-रोटी, व्यापार, सरकारी कार्य आदि निपटाने के लिए शहर में आते हैं और शाम को वापिस अपने घर लौट जाते हैं। इसलिए जन यातायात व्यवस्था प्राथमिकता के साथ आवश्यक हो जाती है।

नगरीकरण की समस्याएं

1 गंदी बस्तियों की संख्या में वृद्धि
2 आवास समस्याएं
3 भीड़ और नियंत्रीकरण
4 शहर का रख-रखाव
5 कानून और व्यवस्था
6 यातायात/आवागमन की समस्या

गन्दी बस्तियों के दुष्परिणाम :-
गंदी बस्ती में बच्चों के रहने से अनेक दुष्परिणाम होते हैं। गन्दी बस्ती में रहने वाले निर्धनता के कारण अनेक बुराइयों में फँसते चले जाते हैं।

1 बाल अपराध :-
समाज में बढ़ते अपराधों का कारण निर्धनता है। गरीब बच्चे धनी बच्चों को जब सब प्रकार की सुविधाओं का भोग करते देखते हैं, तो उनका बालमन उनके प्रति ईर्ष्या तथा द्वेष आदि की भावनाओं से भर जाता है और वे बाल अपराध करना शुरू कर देते हैं।

2 नैतिक पतन :-
आज व्यक्ति का नैतिक पतन हो रहा है इसका कारण निर्धनता है। संस्कृत में एक कहावत है कि 'भूखा व्यक्ति कौन सा पाप नहीं करता ?'

3. आत्महत्या :-
आज व्यक्ति तनावग्रस्त होकर आत्महत्या जैसा कदम उठा लेता है। समाज उस व्यक्ति की योग्यताओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाता है।

4. बुरे व्यसनों में वृद्धि :- गंदी बस्तियों में रहने वाले बच्चे मद्यपान, नशा, जुआ तथा वेश्यागमन जैसी बुराइयों से ग्रस्त हो जाते हैं।

5. भिक्षावृत्ति :- गन्दी बस्तियों में रहने वाले गरीबी के कारण अपना पेट भरने के लिए भिक्षा वृत्ति का शिकार हो जाते हैं

6 आर्थिक विकास में बाधा :- गन्दी बस्तियों में रहने वाले व्यक्ति देश मुख्य धारा से न जुड़ कर बुरे व्यसनों में लिप्त हो जाते हैं तथा वे देश में आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं।

7. समाजवादी समाज की स्थापना में बाधा :- भारतीय संविधान द्वारा यहाँ समाजवादी समाज की स्थापना का लक्ष्य रखा गया है अर्थात समानता पर आधारित समाज, लेकिन बढ़ती गरीबी के कारण यहाँ गरीबों व अमीरों के बीच का अंतर बढ़ता जा रहा है जिससे समाजवादी समाज व्यवस्था स्थापित करने का लक्ष्य प्राप्त करना कठिन होता जा रहा है।

8 मानसिक प्रभाव :—
गंदी बस्तियों में रहने वाले बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं होता क्योंकि उनकी माताएं पौष्टिक आहार न लेने के कारण कमजोर रहती है जिसका प्रभाव बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है।

पारिवारिक विघटन :—
शहरी करण के कारण गंदी बस्तियों में रहने वाले व्यक्तियों / परिवारों में आपसी मनमुटाव, संघर्ष तथा तनाव व्याप्त हो जाता है जिससे परिवार छोटे परिवारों में टूट जाते हैं।

गन्दी बस्तियों में रहने वाले बच्चों की पढ़ाई के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम —

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम :—
सन 1986 में 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की शुरुवात की गई थी। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अंशकालिक स्तर पर शिक्षकों की नियुक्ति और स्वयंसेवी शिक्षकों के द्वारा शिक्षण का कार्य करने के कारण यह योजना काफी सफल हुई है।

2. राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम :- इस कार्यक्रम को 1978 में शुरू किया गया था और इसका मुख्य उद्देश्य देश भर के निरक्षर व्यक्तियों को मुख्य रूप से 15 से लेकर 35 वर्ष की आयु-समूह के व्यक्तियों को शिक्षा प्रदान करना और साक्षरता हेतु प्रोत्साहित करना था।

3. राष्ट्रीय साक्षरता मिशन :- निरक्षरता को दूर करने के लिए व शहरी समस्याओं से निपटने के लिए मई 1988 में 15 से लेकर 35 वर्ष की आयु-समूह के 8 करोड़ वयस्क अशिक्षितों को 1995 तक शिक्षित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय साक्षरता मिशन कार्यक्रम की शुरूवात की गई।

4. सभी के लिए शिक्षा पर विश्व सम्मेलन का आयोजन :- सन् 1990 में थाइलैंड में एक विश्व सम्मेलन का आयोजन किया था। जिसका मुख्य उद्देश्य सन् 2000 तक प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक आधार उपलब्ध कराना तथा सन् 2000 तक वयस्क निरक्षरता की दर में कम से कम

अच्छे स्तर पर व्यवस्था करना, और विशेष रूप से महिलाओं की साक्षरता पर जोर देना था।

डाकर-फोरम का संगठन :—

सन् 2000 अप्रैल में डाकर में एक फोरम को संगठित किया गया जिसमें 164 देशों ने हिस्सा लिया। इस फोरम के कार्यक्रमों को इसमें हिस्सा लेने वाले सभी देशों ने स्वीकार किया।

शिक्षा का अधिनियम 2009 :

निरक्षरता को समाप्त करने के लिए शिक्षा का अधिकार 2009 लागू किया गया है जिसके अनुसार 6 से 14 वर्ष के बच्चों को नि: शुल्क तथा अनिवार्य का प्रावधान किया है।

Modernization and Westernization

Q. आधुनिकीकरण से आपका क्या अभिप्राय है? आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा के अर्थ तथा आधुनिकीकरण के अंतर्गत शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, सहगामी - क्रियाओं, शिक्षण - विधियों तथा शिक्षक की भूमिका की विवेचना कीजिए।

अथवा

आधुनिकीकरण के अर्थ तथा विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए इसके शैक्षिक स्वरूप का वर्णन कीजिये।

अथवा

आधुनिकीकरण किसे कहते हैं? विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का उल्लेख कीजिए।

Ans परिचय :-

आधुनिक बनने की प्रक्रिया ही आधुनिकीकरण है। यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।

आधुनिकीकरण से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा कोई समाज अपनी एक अलग पहचान बनाने में सक्षम होता है। जब एक परंपरागत समाज तकनीकी एवं वैज्ञानिकता की ओर उन्मुख

समाज में रूपांतरित हो जाए तो वह आधुनिकीकृत समाज कहलाता है। यह समाज सांस्कृतिक दायित्वों के महत्व को तो स्वीकार करता है, लेकिन रूढ़ियों एवं पुरातनपंथी विचारों से चिपका नहीं रहता।

आधुनिकीकरण की परिभाषा :-

एम. एन श्रीनिवास के अनुसार :- आधुनिकीकरण का अर्थ सामाजिक गतिशीलता से भी लिया जा सकता है।

प्रो. आर. एस पाण्डेय ने लिखा है कि, "आधुनिकीकरण का अर्थ शारीरिक मानसिक तथा सामाजिक गतिशीलता से है।"

दीपांकर गुप्ता ने लिखा है - "आधुनिक तकनीकी पर स्वामित्व, किसी भी तरह हमेशा आधुनिकता का संकेत नहीं देता। आधुनिकता का संबंध विशेषकर उन अभिवृत्तियों से है, जो सामाजिक संबंधों में व्यवहार में लाई जाती हैं।"

एक आधुनिक समाज में कम से कम निम्नलिखित विशेषताएं होनी ही चाहिए -

1. मानव का सम्मान
2. सर्वव्यापी मानकों के प्रति निष्ठा।
3. जन्म से प्राप्त विशेषाधिकारों या उनके अभावों की तुलना में लौकिक उपलब्धियों का उन्नयन।
4. सार्वजनिक जीवन में जवाबदेही।

जब किसी समाज में ये प्रवृत्तियाँ विद्यमान रहती हैं तो वह आधुनिक समाज कहलाता है। फिर चाहे उसमें उच्च स्तरीय तकनीकी, तीव्रगामी यातायात के साधन या अन्य प्रकार के भौतिक संसाधन आदि उपलब्ध हो या नहीं, इससे कुछ विशेष फर्क नहीं पड़ता। इस प्रकार की आधुनिकता सामाजिक परिवर्तन लाने में बहुत महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करती है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की विशेषताएँ :-

1. आधुनिकीकरण के कारण हमारे सोचने व कार्य करने के ढंग में परिवर्तन हो सकता है इसके अतिरिक्त इससे आधुनिक राष्ट्रों की नवनिर्मित विचारधाराओं को सूझ-बूझ के साथ अपनाना या उन पर अमल करना है।

2. आधुनिकीकरण अनुकरण की प्रक्रिया न होकर प्रगति की प्रक्रिया है।

3. आधुनिकीकरण गतिशील विधियों तथा व्यावहारिक प्रणाली पर निर्भर है।

4. इसका सम्बंध स्वाभाविक और इच्छित परिवर्तन के साथ है, दबाव डालकर नहीं।

5. इस प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप होने वाले परिवर्तन उद्देश्य केन्द्रित होने चाहिए।

6. इसके द्वारा समाज में बहुसंख्यक लोगों में सामूहिक परिवर्तन होना चाहिए।

7. समाज में सुधार हेतु इसका व्यापकल्प होना चाहिए।

8. आधुनिकीकरण का प्रभाव अच्छा-बुरा दोनों प्रकार का हो सकता है

9. आधुनिकीकरण तब तक सम्भव नहीं जब तक किसी समाज के लोगों में स्वयं को आधुनिक बनने की इच्छा न हो।

10. आधुनिकीकरण में की प्रक्रिया में विज्ञान और तकनीकी का सदुपयोग बहुत आवश्यक है।

बहुत आवश्यक है।

11. आधुनिकीकरण की प्रक्रिया प्रजातान्त्रिक होती है।

12. इसमें व्यक्ति में संघर्ष करने की शक्ति का विकास होता है। यह भाग्यवाद पर विश्वास नहीं करता।

13. आधुनिकीकरण प्रयोजनवाद में आस्था रखता है तथा परिवर्तन इसका मुख्य आधार है।

14. आधुनिकीकरण समानता के सिद्धान्त को अपनाता है और यह एक भावनात्मक शक्ति है।

शिक्षा व आधुनिकीकरण के उद्देश्य :— भारतीय शिक्षा आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा था, "भारत के भाग्य का निर्माण उसके अध्ययन कक्षों में हो रहा है। विज्ञान और तकनीकी पर आधारित इस युग में शिक्षा ही लोगों में समृद्धि, सुरक्षा तथा कल्याण के स्तर का निर्धारण करती है।"

समाज को आधुनिक बनाने की प्रक्रिया में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को देखने में इस

इन उद्देश्यों की आवश्यकता व महत्त्व भी स्पष्ट हो जाता है।
• शिक्षा का योगदान आधुनिकीकरण में इस प्रकार है।

आधुनिकीकरण का उद्देश्य प्रशिक्षित तथा कुशल नागरिक तैयार करना है।
• इस का उद्देश्य रूढ़ियों व अन्धविश्वासों को दूर करना है

आधुनिकीकरण का उद्देश्य संस्कृति की सुरक्षा करना, उसका विकास करना तथा अनुपयोगी बातों को छोड़कर उसमें कुछ नवीन जोड़कर उसका शोधन करना है।

आधुनिकीकरण का उद्देश्य तार्किक चिंतन व वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना है।

आधुनिकीकरण का उद्देश्य नवीनतम जानकारी प्रदान करना है।

शिक्षा व्यक्ति को प्राचीन एवं नवीन दोनों प्रकार के मूल्यों की जानकारी प्रदान कर अच्छे मूल्यों का सृजन करना है।

शिक्षा व्यक्ति में प्रजातान्त्रिक मूल्यों व धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण का विकास करती है।

8. शिक्षा व्यक्तियों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है, जिससे वे प्राचीन रूढ़ियों, अंधविश्वासों तथा पूर्वाग्रहों को छोड़कर नवीन एवं उपयोगी विचारों व मूल्यों को सीख सकें।

9. शिक्षा आधुनिकीकरण में आने वाली बाधाओं को दूर करती है।

10. आधुनिकीकरण के लिए आदर्श नेतृत्व तैयार करती है।

11. शिक्षा आधुनिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए ~~[illegible]~~ विशेषज्ञों को तैयार करती है।

12. शिक्षा प्राचीनतम व आधुनिकता में समन्वय स्थापित करती है।

13. आधुनिकता में राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास होता है।

14. आधुनिकीकरण का उद्देश्य व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि करना है।

15. आधुनिकीकरण का उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन देना है।

आधुनिकीकरण एवं पाठ्यक्रम :- आधुनिक युग में आधुनिकता का बोलबाला है। इसलिए स्वाभाविक है कि शिक्षा आधुनिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु पाठ्यक्रम भी आधुनिक होना चाहिए अन्यथा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती। समुचित आधुनिकता के लिए पाठ्यक्रम का समुचित आधुनिक होना अनिवार्य है जिससे पाठ्य क्रम का आधार विज्ञान व तकनीकी हो, देश की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने वाला पाठ्यक्रम हो। पाठ्यक्रम को आधुनिक बनाने हेतु निम्न विषयों की शिक्षा प्रभावशाली हो सकती है।

विज्ञान Science
अंग्रेजी भाषा English language
नैतिक शिक्षा व मूल्य शिक्षा
व्यावसायिक शिक्षा Vocational Education
कार्य अनुभव Work Experience
२ कम्प्यूटर शिक्षा Computer Education
४. संस्कृत भाषा Sanskrit language
Moral and Value Education

आधुनिकीकरण एवं सहगामी गतिविधियाँ :- विद्यार्थी के सामान्य विषयों के अध्ययन के साथ-२ सहगामी पाठ्यक्रम को भी लेना चाहिए ताकि विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो सके।

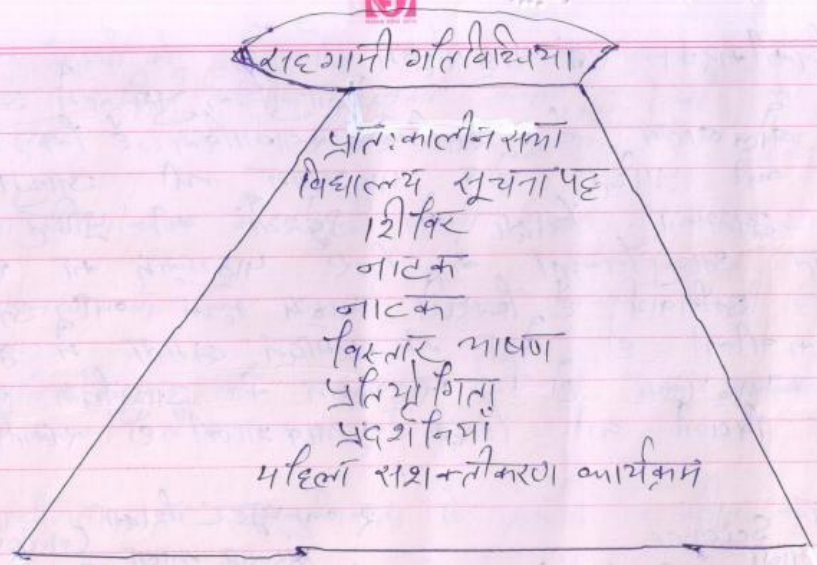

आधुनिकीकरण व शिक्षण विधियाँ:-

आधुनिकीकरण हेतु विज्ञान तथा तकनीकी का अध्ययन बहुत आवश्यक है, इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि इस प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जाए जिससे विद्यार्थियों का दृष्टिकोण वैज्ञानिक बन जाए। इसलिए आधुनिकता के इस युग में निम्न विधियों को अपनाना चाहिए।

1. अनुसंधान विधि — Heuristic Method
2. आगमन - निगमन विधि — Inductive-Deductive Method
3. प्रदर्शन विधि — Demonstration Method

इन विधियों को प्रभावशाली बनाने हेतु विज्ञान पर आधारित टी.वी. रेडियो, कम्प्यूटर, वीडियो का प्रयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त निरीक्षण एवं अवलोकन विधि के तरीके का भी प्रयोग किया जाता है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका :—

अध्यापक को भी बदलती स्थितियों के साथ समायोजन करना होगा। उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक होना चाहिए। उसके स्वयं के विचार रूढ़िवादी न होकर आधुनिक होने चाहिए। वह परिवर्तन में विश्वास रखने वाला हो। उसके लिए यह आवश्यक कि वह गतिशीलता की ओर सक्रिय हो ताकि विद्यार्थी भी उसका अनुसरण करते हुए गतिशील हो। यह विज्ञान व नई तकनीकों का प्रयोग करने में सक्षम हो।

आधुनिकीकरण एवं विद्यालय :—

आधुनिक समाज में शिक्षा तभी प्रभावशाली हो सकती है जब क्षेत्र के स्कूलों व शिक्षण संस्थानों

निम्न बातें हो —

1. स्कूल का वातावरण प्रजातांत्रिक हो, इस प्रकार के वातावरण में बच्चों को अपनी क्षमता अनुसार अवसर प्राप्त हो

2. स्कूल में आधुनिक सुविधाएं जैसे - टी.वी., प्रोजेक्टर, टेपरिकार्डर तथा कम्प्यूटर अवश्य होने चाहिए। इनका शिक्षण में समुचित प्रयोग किया जाना चाहिए।

3. स्कूल में सहगामी पाठ्य विषयों का प्रबंध होना चाहिए जिससे विद्यार्थी इसमें भाग ले सकें।

4. प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों को विद्यार्थियों को आधुनिक समाज के वातावरण से समायोजन करना सिखाना चाहिए।

5. विद्यालय में प्रयोगशाला, पुस्तकालय एवं अन्य सुविधाएँ होनी चाहिए। पुस्तकालय में काफी पुस्तकें होनी चाहिए इसमें विभिन्न मैगजीन, पत्रिकाएँ व नियमित रूप से समाचार पत्र मंगाए जाने चाहिए।

विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया :-

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने जीवन के निम्नलिखित क्षेत्रों को प्रभावित किया है-

1. कृषि का क्षेत्र :-

आधुनिकीकरण की ~~कारण नवीन उद्योगों~~ प्रक्रिया के कारण आज कृषक खेती की प्राचीन विधियों को छोड़ कर नई विधियों को अपनाने लगे हैं।

2. औद्योगिक क्षेत्र :-

आधुनिकीकरण के कारण नवीन उद्योगों का विकास हो रहा है, मशीनों का प्रयोग बढ़ा है, यातायात तथा संचार सुविधाओं का विस्तार हुआ है, शहरीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी है, प्रतियोगिता की भावना का विकास हुआ है।

3. स्वास्थ्य एवं चिकित्सा का क्षेत्र :-

किसी समय असाध्य समझे जाने वाले रोगों की चिकित्सा अब सम्भव हो गयी है। अंगों के प्रत्यारोपण द्वारा मरणासन्न व्यक्तियों को नया जीवन दान मिला है। स्वास्थ्य तथा चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार के कारण मृत्युदर में कमी आयी है तथा लोग नियोजित परिवार के महत्व को समझ गए हैं जिससे जीवन स्तर में पर्याप्त सुधार हुआ है।

4 राजनैतिक क्षेत्र :-
राजनैतिक क्षेत्र में सामन्तवाद तथा कुलीन तन्त्र की समाप्ति हुई है और प्रजातान्त्रिक समाज व्यवस्था में लोगों का विश्वास उत्पन्न हुआ है।

5 आधुनिकीकरण एवं समाज व्यवस्था :-
आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने हमारी समाज व्यवस्था को भी अनेक रूपों में प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन हो गया है। बाल-विवाह, सती प्रथा तथा अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों व अन्धविश्वासों में कमी आई है। परन्तु सामाजिक क्षेत्र में इस प्रक्रिया के कुछ दुष्परिणाम भी सामने आए हैं क्योंकि अत्याधुनिक बनने के चक्कर में सामाजिक मूल्यों में गिरावट आयी है।

6 शैक्षिक क्षेत्र :-
शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने के लिए इसे निःशुल्क बनाया जा रहा है।
2 प्रथम डिग्री कोर्स का व्यवसायीकरण किया जा रहा है, इसके अतिरिक्त उच्च स्तर पर शोध कार्य एवं विशेषीकरण को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।
3 विज्ञान तथा तकनीकी की शिक्षा पर बल दिया जा रहा है।

4. विद्यालय प्रशासन प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तों पर आधारित है। विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं का समाधान परस्पर सहयोग से किया जाता है।

5. अध्यापक की भूमिका एक मित्र, दार्शनिक एवं मार्गदर्शक की बन गयी है।

7 प्रशासनिक क्षेत्र:-

आज प्रशासनिक सेवाओं में प्रत्यक्ष भर्ती के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। केवल अनुभव या वरीयता के आधार पर व्यक्ति इस क्षेत्र में उच्च पद नहीं पा सकता।

इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में सेवाकालीन प्रशिक्षण की भी व्यवस्था है, जिससे व्यक्ति इन क्षेत्रों में अपनी योग्यता को निखार कर उच्च पद प्राप्त कर सके।

निष्कर्ष:-

इससे स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण से जीवन का कोई क्षेत्र अछूता नहीं रहा है। परन्तु आधुनिकीकरण के नाम पर हमें अन्धानुकरण से बचना चाहिए। नवीन मूल्यों तथा विचारों को ग्रहण करते समय हमें अपनी प्राचीन संस्कृति का भी ध्यान रखना चाहिए।

Sanskritization

प्र.1 संस्कृतिकरण से आप क्या समझते हैं? इसकी क्या विशेषताएं हैं?

अथवा

संस्कृतिकरण का अर्थ बताते हुए यह बताइए कि इसका निम्न जातियों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

अथवा

संस्कृतिकरण से भारतीय समाज में कैसे परिवर्तन आ रहे हैं?

अथवा

संस्कृतिकरण का क्या अर्थ है? इसके प्रमुख स्वरूप क्या है?

उत्तर. परिचय :-

भारतीय समाज के सन्दर्भ में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया या अवधारणा कोई नयी प्रत्यय नहीं है, क्योंकि यह न्यूनाधिक अंशों में किसी ने किसी रूप में बहुत अधिक प्राचीन युग से ही सम्पूर्ण भारतीय समाज को प्रभावित करती रही है। इस अवधारणा को एक विशिष्ट सन्दर्भ और अर्थ में प्रस्तुत करने का श्रेय श्री एम. एन. श्री निवास को प्राप्त है। 'संस्कृतिकरण' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग श्री निवास जी ने सन् 1952 में प्रकाशित अपनी चर्चित

कृति 'Religion and Society among the Kurgas of South India' में किया था। संस्कृतिकरण शब्द का प्रयोग उन्होंने दक्षिण भारत की कुर्ग जाति के आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक जीवन के विश्लेषणात्मक अध्ययन में किया था। प्राचीन भारतीय समाज में ब्राह्मण जाति को ही कर्मकाण्डीय और संस्कार के स्तर पर सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, पवित्र तथा हिन्दू संस्कृति का पोषक और रक्षक भी माना जाता था। श्री निवास ने शुरू से निम्न जातियों द्वारा किए गए अनुकरण को ब्राह्मणीकरण की संज्ञा दी थी।

संस्कृतिकरण का अर्थ एवं परिभाषा :-

शुरू में खुद श्री निवास ने 'संस्कृतिकरण' तथा 'ब्राह्मणीकरण' दोनों ही शब्दों को एक समान अर्थों में प्रयुक्त किया है, जिससे इस अवधारणा का पूर्णतया स्पष्ट स्वरूप नहीं प्राप्त हुआ। अनेक स्थलों पर उनकी संस्कृतिकरण की अवधारणा स्वयमेव ही अस्पष्ट तथा भ्रामक प्रतीत होती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि उन्होंने इसका प्रयोग दक्षिण भारत की कुर्ग जाति के सदस्यों के सामाजिक-धार्मिक जीवन के सन्दर्भ में किया है।

डॉ एस. एन श्री निवास के अनुसार :-

संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जाति अथवा कोई जनजाति अथवा समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की भाँति अपने रीति-रिवाजों, कर्मकाण्डों, विचारधारा एवं जीवन पद्धति को बदलने लगते हैं।"

डॉ. एम. एन. श्री निवास का मत है कि संस्कृतिकरण की अवधारणा का तात्पर्य केवल मात्र नये रीति-रिवाजों और आदतों को ग्रहण करना ही नहीं, अपितु नये विचारों और मूल्यों की भी अभिव्यक्ति करना है।

इससे यह बात होता है कि संस्कृतिकरण की प्रक्रिया वस्तुतः किसी भी निचली स्थिति वाले समूह की उस आकांक्षा और प्रयत्नों की स्पष्ट अभिव्यक्ति है, जो कि सामाजिक संस्तरण में अपनी वर्तमान परिस्थिति को उच्च करने के लिए की जाती है। इस तरह संस्कृतिकरण की अवधारणा केवल ब्राह्मणी करण आदर्शों का अनुकरण नहीं है।

संस्कृति करण की प्रमुख विशेषताएं :-

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया अर्थात अवधारणा में निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएं सम्मिलित हैं।

1. अनुकरण पर आधारित:- संस्कृतिकरण अनुकरण पर आधारित है। इसमें निम्न जातियाँ ब्राह्मणों के अतिरिक्त भी क्षत्रिय एवं द्विज जातियों के सांस्कृतिक आदर्शों का भी अनुकरण करती है। कुछ स्थानीय प्रभु तथा प्रबल जातियाँ भी संस्कृतिकरण का आधार सिद्ध हो सकती है।

2. संस्कृतिकरण एक प्रक्रिया है, जिसमें निम्न जाति के व्यक्ति उच्च जाति के व्यक्तियों के विभिन्न क्रिया-कलापों का अनुकरण करने का प्रयत्न करते हैं। इस तरह से संस्कृतिकरण की प्रक्रिया नीची जातियों की सामूहिक गतिशीलता में सहायक है। उसके द्वारा केवल स्थिति या पदमूलक परिवर्तन ही होते हैं।

3. व्यक्ति की स्थिति भारतीय सामाजिक व्यवस्था के सन्दर्भ में वस्तुतः सामाजिक संस्तरण पर ही आधारित है। नीची जातियाँ अनेक तरह की धार्मिक व सामाजिक निर्योग्यताओं से ग्रस्त होती है व उच्च जातियों के जीवन सम्बंधी विचारों और प्रतिमानों को नहीं अपना सकती है।

4. ब्राह्मणों, द्विजों अथवा प्रबल जातियों के सांस्कृतिक प्रतिमानों तथा व्यवहारों को ग्रहण करने के अलावा नीची जाति के

व्यक्ति अपने अशुद्ध पेशों, रहन-सहन की पद्धति व अपवित्र खान-पान सम्बंधी विचार भी त्यागने लगें क्योंकि उच्च जाति के मूल्यों, आदर्शों आदि का अनुकरण करने से स्वयं को उच्च प्रतीत करने लगते हैं।

5 संस्कृतिकरण का सर्वप्रमुख उद्देश्य वस्तुतः निचले समूहों के द्वारा जातिगत सोपान क्रम में ऊँची स्थिति को ही प्राप्त करना होता है। संस्कृतिकरण की दिशा में प्रवृत्त नीची जातियों को चूँकि भविष्य में कुछ उच्च स्थिति प्राप्त होने की उम्मीद रहती है।

6 संस्कृतिकरण केवल मात्र सामाजिक परिवर्तन से सम्बंधित प्रक्रिया नहीं है, अपितु यह सांस्कृतिक परिवर्तनों की जनदात्री भी होती है। साहित्य, कला, संगीत, भाषा एवं धार्मिक कर्मकाण्ड तथा विधि-विधान व विचारों की उत्पत्ति में भी इसी संस्कृतिकरण के द्वारा परिवर्तन होता है।

संस्कृतिकरण का निम्न जातियों पर प्रभाव:
शुरू से ही भारतवर्ष एक महान विशाल देश रहा है। जिसमें असंख्य जातियाँ पाई जाती हैं इन सभी जातियों की अपनी-2 विशिष्टताएं तथा भूमिकाएं

महत्व है। भारतीय जाति-प्रथा का एक विशिष्ट श्रेणीकरण अथवा सौंपन है और प्रत्येक जाति के साथ उसकी उत्पत्ति सम्बन्धी एक विशेष कथा भी संलग्न है। इसलिए जातियों की वेश-भूषा, खान-पान, मूल्य, आदर्श, विचार रीति-रिवाज, परम्पराएँ, धर्म, अनुष्ठान कर्मकाण्ड आदि में विभिन्नताएँ दृष्टिगत होती हैं। भारतीय समाज में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया कोई नयी घटना नहीं है, बल्कि यह तो हजारों वर्षों से क्रियाशील है।

इसका सजीव उदाहरण दक्षिण भारत की लुहार जाति है, जो स्वयं को ब्राह्मण कहते हैं, यज्ञोपवीत धारण करते हैं और विभिन्न तरह के धार्मिक संस्कार और कर्मकाण्ड भी करते हैं। इसके बावजूद भी इसका बहुसंख्यक वर्ग मांस-मदिरा भक्षण करता है, जिसके फलस्वरूप इनको आज भी नीची जाति माना जाता है। यहाँ तक होलियर नामक अछूत जाति के सदस्य तक इनका छुआ हुआ अन्न-जल ग्रहण नहीं करते हैं। लेकिन स्वतन्त्रता के बाद संस्कृतिकरण को बढ़ावा मिला है और निम्न जातियों में काफी जागरूकता आई है।

संस्कृतिकरण के आदर्श या स्वरूप

1. सांस्कृतिक आदर्श :- संस्कृति की वैदिक युगीन अति विशिष्ट मान्यताओं के आधार पर ही सम्पूर्ण हिन्दू समाज में शामिल असंख्य जातियों को सामाजिक श्रेणीक्रम में ऊँची तथा नीची स्थितियाँ प्राप्त हैं।

2 वर्ण आदर्श:-
वैदिक युगीन वर्ण व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में ब्राह्मण को ही सर्वोच्च सामाजिक स्थिति प्राप्त होती थी। उसके बाद क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र व निम्नतर अन्त्यज वर्ण का क्रमानुसार श्रेणीक्रम में स्थान आरक्षित था। इससे स्पष्ट है कि किसी वर्ण की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा व प्रभुत्व की मात्रा के आधार पर ही उसका अनुकरण करना वस्तुतः संस्कृतीकरण का आदर्श होता है।

3 स्थानीय आदर्श:-
इसी तरह प्रत्येक समुदाय में एक या इससे अधिक जातियाँ अपनी आर्थिक या जनसंख्यात्मक शक्ति के आधार पर अपेक्षाकृत बहुत श्रेष्ठ प्रतिष्ठित समझी जाती है। समुदाय के विभिन्न सदस्यगण जातिगत श्रेणीक्रम के विचार पर समान रूप से उस विशिष्ट जाति को बहुत उच्च, श्रेष्ठ, शक्तिवान एवं सुप्रतिष्ठित मानने लगते है। इनको यहीं-2 पर प्रभुजाति और प्रबल जाति की संज्ञा भी प्राप्त है। भारतवर्ष के अक्सर ग्रामीण समुदाय में कृषक जातियाँ प्रभुता शाली होती है पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गुर्जर, जाट व राजपूत आदि प्रभु या प्रबल जातियाँ है। भारतवर्ष में सामान्यतः जातियाँ समान रूप से संस्कृतिकरण की शाश्वत प्रक्रिया का अनुसरण करती है।